

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

Mahabharata

(द्वितीय खण्ड)

Vol. 2

[वनपर्व और विराटपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)



अनुवादक—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

बीहरी: वनपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
(अरण्यपर्व)					
१-	पाण्डवोंका वनगमन, पुरवासियोंद्वारा उनका अनुगमन और युधिष्ठिरके अनुरोध करनेपर उनमेंसे बहुतोंका झूटना तथा पाण्डवोंका प्रमाण-कोटितीर्थमें राजिवास ...	१४५	१४-	द्यूतके समय न पहुँचनेमें श्रीकृष्णके द्वारा शास्व-के साथ युद्ध करने और सौभविमानसहित उसे नष्ट करनेका संक्षिप्त वर्णन ...	१९०
२-	वनके दोष, अतिथि-सत्कारकी महत्ता तथा कल्याण-के उपायोंके विषयमें धर्मराज युधिष्ठिरसे ब्राह्मणों तथा शौनकाजीकी बातचीत ...	१४९	१५-	सौभ-नाशकी विस्तृत कथाके प्रसङ्गमें द्वारकामें युद्धसम्बन्धी रक्षात्मक तैयारियोंका वर्णन ...	१९२
३-	युधिष्ठिरके द्वारा अन्नके लिये भगवान् सूर्यकी उपासना और उनसे अक्षयपात्रकी प्राप्ति ...	१५५	१६-	शास्वकी विशाल सेनाके आक्रमणका यादवसेना-द्वारा प्रतिरोध, सम्भुद्वारा क्षेमवृद्धिकी पराजय, नेगानाका वध तथा चारुदेष्णद्वारा विविन्ध्यदैत्य-का वध एवं प्रद्युम्नद्वारा सेनाको आश्वासन ...	१९४
४-	विदुरजीका धृतराष्ट्रको हितकी सलाह देना और धृतराष्ट्रका रष्ट्र होकर महत्त्वमें चला जाना ...	१६१	१७-	प्रद्युम्न और शास्वका घोर युद्ध ...	१९७
५-	पाण्डवोंका काम्यकवनमें प्रवेश और विदुरजीका यहाँ आकर उनसे मिलना और बातचीत करना ...	१६३	१८-	मूर्च्छावस्थामें सारथिके द्वारा रणभूमिसे बाहर लाये जानेपर प्रद्युम्नका अनुताप और इसके लिये सारथिकी उपालम्भ देना ...	१९८
६-	धृतराष्ट्रका संजयको भेजकर विदुरको वनसे बुलवाना और उनसे क्षमा-प्रार्थना ...	१६६	१९-	प्रद्युम्नके द्वारा शास्वकी पराजय ...	२००
७-	दुर्योधन, दुःशासन, द्रुपदि और कर्णकी सलाह, पाण्डवोंका वध करनेके लिये उनका वनमें जाने-की तैयारी तथा व्यासजीका आकर उनको रोकना ...	१६८	२०-	श्रीकृष्ण और शास्वका भीषण युद्ध ...	२००
८-	व्यासजीका धृतराष्ट्रसे दुर्योधनके अन्यायको रोकनेके लिये अनुरोध ...	१६९	२१-	श्रीकृष्णका शास्वकी मायासे मोहित होकर पुनः सजग होना ...	२०५
९-	व्यासजीके द्वारा सुगन्धि और इन्द्रके उपाख्यानका वर्णन तथा उनका पाण्डवोंके प्रति दया दिखलाना ...	१७०	२२-	शास्ववधोपाख्यानकी समाप्ति और युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण, धृष्टद्युम्न तथा अन्य सब राजाओंका अपने-अपने नगरको प्रस्थान ...	२०७
१०-	व्यासजीका जाना, मैत्रेयजीका धृतराष्ट्र और दुर्योधनसे पाण्डवोंके प्रति सन्दायका अनुरोध तथा दुर्योधनके अशिष्ट व्यवहारसे रष्ट्र होकर उसे क्षाम देना ...	१७२	२३-	पाण्डवोंका द्वैतवनमें जानेके लिये उद्यत होना और प्रजावर्गकी व्याकुलता ...	२०११
(किर्मीरवधपर्व)					
११-	भीमसेनके द्वारा किर्मीरके वधकी कथा ...	१७५	२४-	पाण्डवोंका द्वैतवनमें जाना ...	२०१३
(अर्जुनाभिगमनपर्व)					
१२-	अर्जुन और द्रौपदीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति, द्रौपदीका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने प्रति किये गये अपमान और दुःखका वर्णन और भगवान् श्रीकृष्ण, अर्जुन एवं धृष्टद्युम्नका उसे आश्वासन देना ...	१८०	२५-	महर्षि भार्कण्डेयका पाण्डवोंको धर्मका आदेश देकर उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान ...	२०१५
१३-	श्रीकृष्णका अर्जुनके दोष बताते हुए पाण्डवोंपर जायी हुई विपत्तिमें अपनी अनुपस्थितिकी कारण मानना ...	१८९	२६-	दत्तपुत्र बकका युधिष्ठिरको ब्राह्मणोंका महत्त्व बतलाना ...	२०१७
			२७-	द्रौपदीका युधिष्ठिरसे उनके क्षत्रविभग कोषको उभाड़नेके लिये संतापपूर्ण वचन ...	२०१९
			२८-	द्रौपदीद्वारा प्रह्लाद-कलि-संवादका वर्णन—तेज और क्षमाके अन्तर ...	२०२२
			२९-	युधिष्ठिरके द्वारा कोषकी निन्दा और क्षमाभावकी विशेष प्रशंसा ...	२०२४
			३०-	दुःखसे मोहित द्रौपदीका युधिष्ठिरकी बुद्धि, धर्म एवं ईश्वरके न्यायपर आशेष ...	२०२८
			३१-	युधिष्ठिरद्वारा द्रौपदीके आक्षेपका समाधान तथा ईश्वर, धर्म और महापुरुषोंके आदरसे क्षम और अनादरसे हानि ...	२०३१

- ३२-द्रौपदीका पुनरागमको प्रथम मानकर पुनरागम करनेके लिये जोर देना ... १०३४
- ३३-भीमसेनका पुनरागमकी प्रशंसा करना और युधिष्ठिरको उत्तेजित करते हुए अधिय-धर्मके अनुसार युद्ध छेड़नेका अनुरोध ... १०३८
- ३४-धर्म और नीतिकी बात कहते हुए युधिष्ठिरकी अपनी प्रतिज्ञाके पालनरूप धर्मपर ही धृष्टे रहनेकी घोषणा ... १०४४
- ३५-दुःखित भीमसेनका युधिष्ठिरको युद्धके लिये उत्साहित करना ... १०४७
- ३६-युधिष्ठिरका भीमसेनको समझाना, व्यासजीका आगमन और युधिष्ठिरको प्रतिस्मृतिविद्या-प्रदान तथा पाण्डवोंका पुनः काम्यकवनगमन ... १०४९
- ३७-अर्जुनका सब भाई आदिसे मिलकर इन्द्रकी लक्ष्य पर्यटन जाना एवं इन्द्रका दर्शन करना ... १०५२
- (कैरातपर्व)
- ३८-अर्जुनकी उग्र तपस्या और उसके धिपयमें ऋषियोंका भगवान् शङ्करके साथ वार्तालाप ... १०५६
- ३९-भगवान् शङ्कर और अर्जुनका युद्ध, अर्जुनपर उनका प्रसन्न होना एवं अर्जुनके द्वारा भगवान् शङ्करकी स्तुति ... १०५९
- ४०-भगवान् शङ्करका अर्जुनको वरदान देकर अपने धामकी प्रस्थान ... १०६५
- ४१-अर्जुनके पास दिव्यशस्त्रोंका आगमन एवं उन्हें दिव्यशस्त्र-प्रदान तथा इन्द्रका उन्हें स्वर्गमें चलेनेका आदेश देना ... १०६७
- (इन्द्रलोकाभिगमनपर्व)
- ४२-अर्जुनका हिमालयसे विदा होकर मातलिके साथ स्वर्गलोककी प्रस्थान ... १०७०
- ४३-अर्जुनद्वारा देवराज इन्द्रका दर्शन तथा इन्द्र-सभामें उनका स्वागत ... १०७३
- ४४-अर्जुनको अस्त्र और मञ्जीतकी शिक्षा ... १०७५
- ४५-चित्रसेन और उर्वशीका वार्तालाप ... १०७६
- ४६-उर्वशीका कामपीडित होकर अर्जुनके पास जाना और उनके अम्बोकार करनेपर उन्हें शपथ देकर लौट आना ... १०७७
- ४७-लोमदा मुनिका स्वर्गमें इन्द्र और अर्जुनसे मिलकर उनका संदेश ले काम्यकवनमें आना ... १०८२
- ४८-दुःखित धृतराष्ट्रका संजयके सम्मुख अपने पुत्रों-के लिये चिन्ता करना ... १०८४
- ४९-संजयके द्वारा धृतराष्ट्रकी बातोंका अनुमोदन और धृतराष्ट्रका संताप ... १०८६
- ५०-वनमें पाण्डवोंका आहार ... १०८८
- ५१-संजयका धृतराष्ट्रके प्रति श्रीकृष्णादिके द्वारा की हुई दुर्योधनादिके वचनों की प्रतिज्ञाका इच्छान्त सुनाना ... १०८८
- (नलोपाख्यानपर्व)
- ५२-भीमसेन-युधिष्ठिरसंवाद, बृहदश्वका आगमन तथा युधिष्ठिरके पुलनेपर बृहदश्वके द्वारा नलोपाख्यानकी प्रस्तावना ... १०९१
- ५३-नल-दमयन्तीके गुणोंका वर्णन, उनका परस्पर अनुराग और हंसका दमयन्ती और नलकी एक दूसरेके संदेश सुनाना ... १०९५
- ५४-स्वर्गमें नारद और इन्द्रकी वातनीत, दमयन्तीके स्वयंवरके लिये राजाओं तथा लोकपालोंका प्रस्थान ... १०९८
- ५५-नलका दूत बनकर राजमाहलमें जाना और दमयन्तीको देवताओंका संदेश सुनाना ... ११००
- ५६-नलका दमयन्तीसे वार्तालाप करना और लौट-कर देवताओंको उसका संदेश सुनाना ... ११०२
- ५७-स्वयंवरमें दमयन्तीद्वारा नलका वरण, देवताओं-का नलको वर देना, देवताओं और राजाओं-का प्रस्थान, नल-दमयन्तीका विवाह एवं नलका यशानुष्ठान और संतानोत्पादन ... ११०४
- ५८-देवताओंके द्वारा नलके गुणोंका गान और उनके निषेध करनेपर भी नलके निश्चिन्त कलियुगका कोप ... ११०८
- ५९-नलमें कलियुगका प्रवेश एवं नल और पुष्कर-की घृत्कीर्षा, प्रजा और दमयन्तीके निवारण करनेपर भी राजाका शूलसे निहत्त नहीं होना ... ११०९
- ६०-दुःखित दमयन्तीका वार्ष्णेयके द्वारा कुमार-कुमारीको कुण्डिनपुर भेजना ... १११०
- ६१-नलका जूझमें हारकर दमयन्तीके साथ वनको जाना और पक्षियोंद्वारा आपद्भूत नलके वस्त्रत्र अपहरण ... १११२
- ६२-राजा नलकी चिन्ता और दमयन्तीको अकेली मोती छोड़कर उनका अन्यत्र प्रस्थान ... १११५
- ६३-दमयन्तीका विलाप तथा अजगर एवं व्याधसे उसके प्राण एवं स्तित्वकी रक्षा तथा दमयन्ती-के प्रतिव्रत्यधर्मके प्रभावसे व्याधका विनाश ... १११७
- ६४-दमयन्तीका विलाप और प्रलाप, तपस्वियोंद्वारा दमयन्तीको आश्वासन तथा उसकी व्यापारियोंके दलसे भेंट ... ११२०

- ७१-जंगली हाथियोंद्वारा व्यापारियोंके दलका सर्वनाश तथा दुःखित दमयन्तीका चेदिराजके भवनमें सुलपूर्वक निवास ... ११२८
- ७२-राजा नलके द्वारा दानानलसे कर्कोटक नागकी रक्षा तथा नागद्वारा नलको आश्वत्थ ... ११२४
- ७३-राजा नलका ऋतुपर्णके वहाँ अश्वत्थके पदपर नियुक्त होना और वहाँ दमयन्तीके लिये निरन्तर चिन्तित रहना तथा उनकी जीवत्से व्रतचीत ... ११३६
- ७४-विदर्भराजका नल-दमयन्तीकी खोजके लिये ब्राह्मणोंको भेजना; सुदेव ब्राह्मणका चेदिराजके भवनमें जाकर अन-ही-मन दमयन्तीके गुणोंका चिन्तन और उससे भेंट करना ... ११३७
- ७५-दमयन्तीका अपने पिताके वहाँ जाना और वहाँसे नलको ढूँढ़नेके लिये अपना संदेश देकर ब्राह्मणोंको भेजना ... ११४०
- ७६-पर्णादका दमयन्तीसे बाहुकस्यधारी नलका समाचार बताना और दमयन्तीका ऋतुपर्णके वहाँ सुदेव नामक ब्राह्मणको स्वयंवरका संदेश देकर भेजना ... ११४४
- ७७-राजा ऋतुपर्णका विदर्भदेशको प्रस्थान; राजा नलके स्थितमें वाण्येयका विचार और बाहुककी अद्भुत अश्वसंचालन-कलासे वाण्येय और ऋतुपर्णका प्रभावित होना ... ११४६
- ७८-ऋतुपर्णके उत्तरीय वस्त्र गिरने और बड़ेछेके वृक्षके फलोंको गिरनेके स्थितमें नलके साथ ऋतुपर्णकी बातचीत; ऋतुपर्णसे नलको धृतविद्याके रहस्यकी शक्ति और उनके शरीरसे कलियुगका निकलना ... ११४९
- ७९-ऋतुपर्णका कुण्डिनपुरमें प्रवेश; दमयन्तीका विचार तथा भीमके द्वारा ऋतुपर्णका स्वागत ... ११५२
- ८०-बाहुक-केशिनी-संवाद ... ११५४
- ८१-दमयन्तीके आदेशसे केशिनीद्वारा बाहुककी परीक्षा तथा बाहुकका अपने लड़के-लड़कियोंको देखकर उनसे प्रेम करना ... ११५७
- ८२-दमयन्ती और बाहुककी बातचीत; नलका प्राक्ख और नल-दमयन्ती-मिलन ... ११५९
- ८३-नलके प्रकट होनेपर विदर्भनगरमें महान् उत्सवका आयोजन; ऋतुपर्णके साथ नलका वार्तालाप और ऋतुपर्णका नलसे अश्वविद्या सीखकर अयोध्या जाना ... ११६३
- ८४-राजा नलका पुष्करको बूएमें हराना और उसको राजधानीमें भेजकर अपने नगरमें प्रवेश करना ... ११६५

- ८५-राजा नलके आख्यानके कौर्तनका महत्त्व; बृहदश्व मुनिका युधिष्ठिरको आश्वत्थन देना तथा धृतविद्या और अश्वविद्याका रहस्य बताकर जाना ... ११६७

(तीर्थयात्रापर्व)

- ८६-अर्जुनके लिये द्रौपदीसहित पाण्डवोंकी चिन्ता ... ११६९
- ८७-युधिष्ठिरके पास देवर्षि नारदका आगमन और तीर्थयात्राके फलके सम्बन्धमें पूछनेपर नारदजी-द्वारा भीष्म-पुलस्त्य-संवादकी प्रस्तावना ... ११७१
- ८८-भीष्मजीके पूछनेपर पुलस्त्यजीका उन्हें विभिन्न तीर्थोंकी यात्राका माहात्म्य बताना ... ११७३
- ८९-कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित अनेक तीर्थोंकी महत्ताका वर्णन ... ११८१
- ९०-नाना प्रकारके तीर्थोंकी महिमा ... ११९३
- ९१-गङ्गासागर, अयोध्या, चित्रकूट, प्रयाग आदि विभिन्न तीर्थोंकी महिमाका वर्णन और गङ्गाका माहात्म्य ... १२०२
- ९२-युधिष्ठिरका धौम्यमुनिसे पुण्य तपोवन, आश्रम एवं नदी आदिके विषयमें पूछना ... १२१०
- ९३-धौम्यद्वारा पूर्वदिशाके तीर्थोंका वर्णन ... १२११
- ९४-धौम्यमुनिके द्वारा दक्षिणदिशावर्ती तीर्थोंका वर्णन ... १२१३
- ९५-धौम्यद्वारा पश्चिमदिशाके तीर्थोंका वर्णन ... १२१५
- ९६-धौम्यद्वारा उत्तर दिशाके तीर्थोंका वर्णन ... १२१६
- ९७-महर्षि लोमशका आगमन और युधिष्ठिरसे अर्जुनके पाशुपत आदि दिव्यास्त्रोंकी प्राप्ति का वर्णन तथा इन्द्रका संदेश सुनाना ... १२१९
- ९८-महर्षि लोमशके मुखसे इन्द्र और अर्जुनका संवाद सुनकर युधिष्ठिरका प्रसन्न होना और तीर्थयात्राके लिये उद्यत हो अपने अधिक साधियोंको विदा करना ... १२२१
- ९९-ऋषियोंको नमस्कार करके पाण्डवोंका तीर्थ-यात्राके लिये विदा होना ... १२२३
- १००-वेचताओं और धर्मात्मा राजाओंका उदाहरण देकर महर्षि लोमशका युधिष्ठिरको अधर्मसे दूरी बताना और तीर्थयात्राजनित पुण्यकी महिमाका वर्णन करते हुए आश्वत्थन देना ... १२२५
- १०१-पाण्डवोंका नैमिषारण्य आदि तीर्थोंमें जाकर प्रयाग तथा गयातीर्थमें जाना और गय राजाके महान् यशोंकी महिमा सुनाना ... १२२६
- १०२-इत्यल और वातापिका वर्णन; महर्षि अगस्त्यका पितरोंके उद्धारके लिये विवाह करनेका विचार तथा विदर्भराजका महर्षि अगस्त्यसे एक कन्या पाना ... १२२८

- १७-महर्षि अगस्त्यका गोपामुद्रासे विवाह;
गङ्गाद्वारमें तपस्या एवं पत्नीकी इच्छासे धन-
संप्राप्तिके लिये प्रस्थान ... १२३१
- १८-धन प्राप्त करनेके लिये अगस्त्यका श्रुतर्था;
ब्रध्नश और वसदत्त आदिके पास जाना ... १२३३
- १९-अगस्त्यजीका इच्छलके यहाँ धनके लिये
जाना; वातापि तथा इच्छलका वध; लोमामुद्रा-
को पुत्रकी प्राप्ति तथा भीरुमके द्वारा हरे हुए
तेजकी परशुरामको तीर्थस्नानद्वारा पुनः प्राप्ति १२३४
- १००-वृत्रासुरसे व्रत देवताओंको महर्षि दधीचिका
अस्त्रदान एवं वज्रका निर्माण ... १२४०
- १०१-वृत्रासुरका वध और असुरोंकी भयंकर मन्त्रणा १२४२
- १०२-कालेयोंद्वारा तपस्वियों, मुनियों और ब्रह्मचारियों
आदिका संहर तथा देवताओंद्वारा भगवान्
विष्णुकी स्तुति ... १२४४
- १०३-भगवान् विष्णुके आदेशसे देवताओंका महर्षि
अगस्त्यके आश्रमपर जाकर उनकी स्तुति करना १२४५
- १०४-अगस्त्यजीका विन्ध्यपर्वतको बढ़नेसे रोकना
और देवताओंके साथ सागर-तटपर जाना ... १२४७
- १०५-अगस्त्यजीके द्वारा समुद्रपान और देवताओं-
का कालेय दैत्योंका वध करके ब्रह्माजीसे
समुद्रको पुनः भरनेका उपाय पृथना ... १२४९
- १०६-राजा सगरका संतानके लिये तपस्या करना
और शिवजीके द्वारा वरदान पाना ... १२५१
- १०७-सगरके पुत्रोंकी उत्पत्ति; साठ हजार सगर-
पुत्रोंका कपिलकी क्रीडाप्रति भस्म होना;
असमञ्जसका परित्याग; अंशुमान्के प्रयत्नसे
सगरके यशकी पूर्ति; अंशुमान्से दिलीपको
और दिलीपसे भगीरथको राज्यकी प्राप्ति ... १२५३
- १०८-भगीरथका हिमालयपर तपस्याद्वारा गङ्गा और
महादेवजीको प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त करना १२५७
- १०९-पृथ्वीपर गङ्गाजीके उतरने और समुद्रको जल
से भरनेका विवरण तथा सगरपुत्रोंका उद्धार १२५९
- ११०-नन्दा तथा कौशिकीका माहात्म्य; ऋष्यशृङ्ग
मुनिका उपास्थान और उनको अपने राज्यमें
लानेके लिये राजा लोमपादका प्रयत्न ... १२६१
- १११-वेदयाका ऋष्यशृङ्गको बुझाना और विभाण्डक
मुनिका आश्रमपर आकर अपने पुत्रकी
चिन्ताका कारण पृथना ... १२६५
- ११२-ऋष्यशृङ्गका पिताको अपनी चिन्ताका कारण
बतते हुए ब्रह्मचारिरूपधारी वेदयाके स्वरूप
और आचरणका वर्णन ... १२६७
- ११३-ऋष्यशृङ्गका अङ्गराज लोमपादके यहाँ जाना;
राजाका उन्हें अपनी कन्या देना; राजाद्वारा
विभाण्डक मुनिका सत्कार तथा उनपर मुनि-
का प्रसन्न होना ... १२६९
- ११४-युधिष्ठिरका कौशिकी; गङ्गासागर एवं वैतरणी
नदी होते हुए महेन्द्रपर्वतपर गमन ... १२७२
- ११५-अकृतवर्णके द्वारा युधिष्ठिरसे परशुरामजीके
उपास्थानके प्रसन्नमें ऋचीक मुनिका गाभि-
कन्याके साथ विवाह और भृगुश्रुषिकी कृपासे
जमदग्नि की उत्पत्तिका वर्णन ... १२७५
- ११६-पिताकी आज्ञासे परशुरामजीका अपनी माता-
का मस्तक काटना और उन्हींके वरदानसे
पुनः जिलाया; परशुरामजीद्वारा कार्तवीर्य
अर्जुनका वध और उसके पुत्रोंद्वारा जमदग्नि
मुनिकी हत्या ... १२७८
- ११७-परशुरामजीका पिताके लिये विलाप और
पृथ्वीको इकस बार निःक्षत्रिय करना एवं
महाराज युधिष्ठिरके द्वारा परशुरामजीका पूजन १२८१
- ११८-युधिष्ठिरका विभिन्न तीर्थोंमें होते हुए प्रभास-
क्षेत्रमें पहुँचकर तपस्यामें प्रवृत्त होना और
यादवोंका पाण्डवोंसे मिलना ... १२८९
- ११९-प्रभासतीर्थमें बलरामजीके पाण्डवोंके प्रति
सहानुभूतिपूर्ण दुःखपूर्ण उद्धार ... १२८५
- १२०-साल्वकिके शौर्यपूर्ण उद्धार तथा युधिष्ठिरद्वारा
भीकृष्णके वचनोंका अनुमोदन एवं पाण्डवों-
का पयोष्णी नदीके तटपर निवास ... १२८७
- १२१-राजा गयके वज्रकी प्रशंसा; पयोष्णी; वैदूर्य
पर्वत और नर्मदाके माहात्म्य तथा च्यवन-
सुकन्याके चरित्रका आरम्भ ... १२९१
- १२२-महर्षि च्यवनको सुकन्याकी प्राप्ति ... १२९३
- १२३-अश्विनीकुमारोंकी कृपासे महर्षि च्यवनको
सुन्दर रूप और युवावस्थाकी प्राप्ति ... १२९५
- १२४-क्षर्पातिके वधमें च्यवनका इन्द्रपर कोप करके
वज्रकी सन्धित करना और उसे मारनेके लिये
मदासुरको उत्पन्न करना ... १२९७
- १२५-अश्विनीकुमारोंका यक्षमें भाग स्वीकार कर लेनेपर
इन्द्रका संकटमुक्त होना तथा लोमशजीके
द्वारा अन्यान्य तीर्थोंके महत्त्वका वर्णन ... १२९९
- १२६-राजा मान्धाताकी उत्पत्ति और संक्षिप्त चरित्र १३०१
- १२७-सोमक और जन्तुका उपास्थान ... १३०४
- १२८-सोमकको सौ पुत्रोंकी प्राप्ति तथा सोमक और
पुरोहितका समानरूपसे नरक और पुण्यलोकों-
का उपभोग करना ... १३०६

- १२९-कुवक्षेत्रके द्वारभूत पृथ्वीप्रसवणनामक यमुना-
तीर्थ एवं सरस्वतीतीर्थकी महिमा ... १३०७
- १३०-विभिन्न तीर्थोंकी महिमा और राजा उशीनर-
की कथाका आरम्भ ... १३०९
- १३१-राजा उशीनरद्वारा राजकी अपने शरीरका मांस
देकर शरणमें आये हुए कबूतरके प्राणोंकी
रक्षा करना ... १३११
- १३२-अष्टावक्रके जन्मका वृत्तान्त और उनकी राजा
जनकके दरबारमें जाना ... १३१३
- १३३-अष्टावक्रका द्वारपाल तथा राजा जनकसे
वार्तालाप ... १३१६
- १३४-बन्दी और अष्टावक्रका शास्त्रार्थ; बन्दीकी
पराजय तथा समझाये स्नानसे अष्टावक्रके
अङ्गोंका सीधा होना ... १३२०
- १३५-कूर्दमिलक्षेत्र आदि तीर्थोंकी महिमा; रैभ्य
एवं भरद्वाजपुत्र यवकीर्त मुनिकी कथा तथा
ऋषियोंका अनिष्ट करनेके कारण मेधावीकी
मृत्यु ... १३२६
- १३६-यवकीर्तका रैभ्यमुनिकी पुत्रवधूके साथ
व्यभिचार और रैभ्यमुनिके क्रोधसे उत्पन्न
राक्षसके द्वारा उसकी मृत्यु ... १३३०
- १३७-भरद्वाजका पुत्रशोकसे विलाप करना; रैभ्य-
मुनिकी शाप देना एवं स्वयं अग्निमें प्रवेश
करना ... १३३१
- १३८-अर्धवसुकी तपस्याके प्रभावसे परावसुका
ब्रह्महत्यासे मुक्त होना और रैभ्य, भरद्वाज
तथा यवकीर्त आदिका पुनर्जीवित होना ... १३३३
- १३९-पाण्डवोंकी उत्तराखण्ड-यात्रा और लोमशजी-
द्वारा उसकी दुर्गमताका कथन ... १३३५
- १४०-भीमसेनका उत्साह तथा पाण्डवोंका कुलिन्द-
राज्य मुवाहुके राज्यमें होते हुए गन्धमादन
और हिमालय पर्वतकी प्रस्थान ... १३३७
- १४१-युधिष्ठिरका भीमसेनसे अर्जुनको न देखनेके
कारण मानसिक चिन्ता प्रकट करना एवं
उनके गुणोंका स्मरण करते हुए गन्धमादन
पर्वतपर जानेका हृदय निश्चय करना ... १३३९
- १४२-पाण्डवोंद्वारा गङ्गाजीकी वन्दना; लोमशजीका
नरकासुरके बध और भगवान् नाराहद्वारा
वसुधाके उद्धारकी कथा कहना ... १३४१
- १४३-गन्धमादनकी यात्राके समय पाण्डवोंका औंधी-
पानीसे सामना ... १३४५

- १४४-द्रौपदीकी मूर्छा, पाण्डवोंके उपचारसे उसका
सचेत होना तथा भीमसेनके स्मरण करनेपर
घटोत्कचका आगमन ... १३४७
- १४५-घटोत्कच और उसके साथियोंकी सहायतासे
पाण्डवोंका गन्धमादन पर्वत एवं बदरिकाश्रममें
प्रवेश तथा बदरीवृक्ष, नरनारायणाश्रम और
गङ्गाका वर्णन ... १३४९
- १४६-भीमसेनका सौमन्धिक कमल खानेके लिये
जाना और कदली वनमें उनकी हनुमान्जी-
से भेंट ... १३५३
- १४७-श्रीहनुमान् और भीमसेनका संवाद ... १३५९
- १४८-हनुमान्जीका भीमसेनको संक्षेपसे श्रीरामका
चरित्र सुनाना ... १३६२
- १४९-हनुमान्जीके द्वारा चारों युगोंके
धर्मोंका वर्णन ... १३६३
- १५०-हनुमान्जीके द्वारा भीमसेनको अपने विशाल
रूपका प्रदर्शन और चारों वर्णोंके धर्मोंका
प्रतिपादन ... १३६६
- १५१-हनुमान्जीका भीमसेनको आश्वासन और
विदा देकर अन्तर्धान होना ... १३७०
- १५२-भीमसेनका सौमन्धिक वनमें पहुँचना ... १३७२
- १५३-क्रोधवश नामक राक्षसोंका भीमसेनसे सरोवर-
के निकट आनेका कारण पूछना ... १३७३
- १५४-भीमसेनके द्वारा क्रोधवश नामक राक्षसोंकी
पराजय और द्रौपदीके लिये सौमन्धिक
कमलोंका संग्रह करना ... १३७४
- १५५-भयंकर उत्पन्न देखकर युधिष्ठिर आदिकी
चिन्ता और सबका गन्धमादन पर्वतपर
सौमन्धिकवनमें भीमसेनके पास पहुँचना ... १३७६
- १५६-पाण्डवोंका आकाशवाणीके आदेशसे पुनः
नरनारायणाश्रममें लौटना ... १३७९

(जटासुरवधपर्व)

- १५७-जटासुरके द्वारा द्रौपदीसहित युधिष्ठिर, नकुल,
सहदेवका हरण तथा भीमसेनद्वारा जटासुर-
का वध ... १३८०

(यक्षयुद्धपर्व)

- १५८-नरनारायण-आश्रमसे वृषपर्वाके यहाँ होते
हुए राजर्षि आर्हिषेणके आश्रमपर जाना ... १३८५
- १५९-प्रश्नके रूपमें आर्हिषेणका युधिष्ठिरके प्रति उपदेश १३९३

- १६०-पाण्डवोंका आर्षिप्रेमके आश्रमपर निवास,
द्रौपदीके अशुभप्रभे भीमसेनका पर्वतके शिखर-
पर जाना और यहाँ तथा राक्षसोंसे युद्ध करके
मणिमामूका वध करना ... १३९५
- १६१-कुन्नेरका गन्धमादन पर्वतपर आगमन और
युधिष्ठिरसे उनकी भेंट ... १४००
- १६२-कुन्नेरका युधिष्ठिर आदिको उपदेश और
सान्त्वना देकर अपने भवनको प्रस्थान ... १४०४
- १६३-भौम्यका युधिष्ठिरको भेंट पर्यंत तथा उसके
शिखरोंपर स्थित ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्थानों-
का लक्ष्य कराना और सूर्य-चन्द्रमाकी गति
एवं प्रभावका वर्णन ... १४०७
- १६४-पाण्डवोंकी अर्जुनके लिये उत्कण्ठा और अर्जुन-
का आगमन ... १४१०

(निवातकवचयुद्धपर्यं)

- १६५-अर्जुनका गन्धमादनपर्वतपर आकर अपने
भाइयोंसे मिलना ... १४११
- १६६-इन्द्रका पाण्डवोंके पास आना और युधिष्ठिर-
को सान्त्वना देकर स्वर्गको लौटना ... १४१३
- १६७-अर्जुनके द्वारा अपनी तपस्यायात्राके वृत्तान्त-
का वर्णन भगवान् शिवके साथ संग्राम और
पाशुपतास्त्र-प्राप्तिकी कथा ... १४१५
- १६८-अर्जुनद्वारा स्वर्गलोकमें अपनी अस्त्रशिक्षा और
निवातकवच दानयोंके साथ युद्धकी तैयारीका
कथन ... १४१९
- १६९-अर्जुनका पातालमें प्रवेश और निवातकवचों-
के साथ युद्धारम्भ ... १४२५
- १७०-अर्जुन और निवातकवचोंका युद्ध ... १४२६
- १७१-दानवोंके मायामय युद्धका वर्णन ... १४२८
- १७२-निवातकवचोंका संहार ... १४३०
- १७३-अर्जुनद्वारा हिरण्यपुरपाली पौलोम तथा
कालकेयोंका वध और इन्द्रद्वारा अर्जुनका
अभिनन्दन ... १४३६
- १७४-अर्जुनके मुखसे यात्राका वृत्तान्त सुनकर
युधिष्ठिरद्वारा उनका अभिनन्दन और
दिव्यास्त्रदर्शनकी इच्छा प्रकट करना ... १४३८
- १७५-नारद आदिका अर्जुनको दिव्यास्त्रोंके प्रदर्शन-
से रोकना ... १४३९

(आज्ञापर्यं)

- १७६-भीमसेनकी युधिष्ठिरसे बातचीत और पाण्डवों-
का गन्धमादनसे प्रस्थान ... १४४१

- १७७-पाण्डवोंका गन्धमादनसे बदरिकाश्रम,
सुबाहुनगर और विशांपरूप वनमें होते हुए
संरस्वती-तटवर्ती द्वैतवनमें प्रवेश ... १४४३
- १७८-महाबली भीमसेनका हस्तक पशुओंको मारना
और अजगरद्वारा पकड़ा जाना ... १४४६
- १७९-भीमसेन और सर्परूपधारी नहुषकी बात-
चीत, भीमसेनकी विन्ता तथा युधिष्ठिर-
द्वारा भीमकी खोज ... १४४८
- १८०-युधिष्ठिरका भीमसेनके पास पहुँचना और
सर्परूपधारी नहुषके प्रसन्नता उत्तर देना ... १४५२
- १८१-युधिष्ठिरद्वारा अपने भयनोंका उचित उत्तर
पाकर संतुष्ट हुए सर्परूपधारी नहुषका
भीमसेनको छोड़ देना तथा युधिष्ठिरके साथ
वार्तालाप करनेके प्रभावसे सर्पयोनिते मुक्त
होकर स्वर्ग जाना ... १४५५

(मार्कण्डेयसमाख्यापर्यं)

- १८२-वर्षा और शरद्-ऋतुका वर्णन एवं युधिष्ठिर
आदिको पुनः द्वैतवनसे काभ्यकवनमें प्रवेश १४५९
- १८३-काभ्यकवनमें पाण्डवोंके पास भगवान्
श्रीकृष्ण, सुनिवर मार्कण्डेय तथा नारदजीका
आगमन एवं युधिष्ठिरके पूछनेपर मार्कण्डेयजी-
के द्वारा कर्मफल-भोगका विवेचन ... १४६०
- १८४-तपस्वी तथा स्वधर्मपरायण मार्कण्डेयका माहात्म्य १४६९
- १८५-ब्राह्मणकी महिमाके विषयमें अग्निमुनि तथा
राजा पृथुकी प्रशंसा ... १४७१
- १८६-तार्क्ष्यमुनि और संरस्वतीका संवाद ... १४७३
- १८७-वैवस्वत भनुका चरित्र तथा मत्स्यावतारकी
कथा ... १४७७
- १८८-चारों युगोंकी वर्ष-संख्या एवं कलियुगके
प्रभावका वर्णन, प्रलयकालका दण्ड और
मार्कण्डेयजीको बालमुकुन्दजीके दर्शन,
मार्कण्डेयजीका भगवान्के उदरमें प्रवेशकर
ब्रह्माण्डदर्शन करना और फिर बाहर निकल-
कर उनसे वार्तालाप करना ... १४८१
- १८९-भगवान् बालमुकुन्दका मार्कण्डेयको अपने
स्वरूपका परिचय देना तथा मार्कण्डेयद्वारा
श्रीकृष्णकी महिमाका प्रतिपादन और पाण्डवों-
का श्रीकृष्णकी शरणमें जाना ... १४९०
- १९०-युगान्तकालिक कलियुगके समयके वर्तमानका
तथा कल्कि-अवतारका वर्णन ... १४९४
- १९१-भगवान् कल्किके द्वारा सत्ययुगकी स्थापना
और मार्कण्डेयजीका युधिष्ठिरके लिये भूमिपदेश १५००

- १९२-इक्ष्वाकुवंशी परीक्षितका मण्डूकराजकी कन्यासे विवाह; शूल और दलके चरित्र तथा कामदेव मुनिकी महत्ता ... १५०२
- १९३-इन्द्र और ऋक मुनिका संवाद ... १५०९
- १९४-अग्नि राजाओंका महत्त्व-सुहोत्र और शिविकी प्रशंसा ... १५१२
- १९५-राजा ययातिद्वारा ब्राह्मणों सहस्र गौओंका दान ... १५१३
- १९६-सेतुक और वृषदर्मका चरित्र ... १५१४
- १९७-इन्द्र और अग्निद्वारा राजा शिविकी परीक्षा १५१५
- १९८-देवर्षि नारदद्वारा शिविकी महत्ताका पतिपादन १५१८
- १९९-राजा इन्द्रसुभ्र तथा अन्य चिरजीवी प्राणियोंकी कथा ... १५२१
- २००-निन्दित दान; निन्दित जन्म; योग्य दानपत्र; भ्रातृमें प्राण और भ्रातृ ब्राह्मण; दानपत्रके लक्षण; अतिथि-सत्कार; विविध दानोंका महत्त्व; वाणीकी शुद्धि; गायत्री-अप; चित्तशुद्धि तथा इन्द्रियनिग्रह आदि विविध विषयोंका वर्णन ... १५२३
- २०१-उत्तकुकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान्का उन्हें करदान देना तथा इक्ष्वाकुवंशी राजा कुवलयधका धुन्धुमार नाम पड़नेका कारण बताना ... १५३२
- २०२-उत्तकुका राजा बृहदश्वसे धुन्धुका वध करनेके लिये आग्रह ... १५३५
- २०३-ब्रह्माजीकी उत्पत्ति और भगवान् विष्णुके द्वारा मधु-कैटभका वध ... १५३७
- २०४-धुन्धुकी तपस्या और वरप्राप्ति; कुवलयधद्वारा धुन्धुका वध और देवताओंका कुवलयधको वर देना ... १५३९
- २०५-पतिव्रता स्त्री तथा पिता-भाताकी सेवाका माहात्म्य ... १५४१
- २०६-कौशिक ब्राह्मण और पतिव्रताके उपाख्यानके अन्तर्गत ब्राह्मणोंके धर्मका वर्णन ... १५४४
- २०७-कौशिकका धर्मव्याधके पास जाना; धर्मव्याधके द्वारा पतिव्रतासे प्रेरित जान लेनेपर कौशिकको आश्चर्य होना; धर्मव्याधके द्वारा वर्णधर्मका वर्णन; जनकुराज्यकी प्रशंसा और शिक्षाचारका वर्णन ... १५४८
- २०८-धर्मव्याधद्वारा हिंसा और अहिंसाका निवेदन १५५५
- २०९-धर्मकी सुश्रुत; शुभाशुभ कर्म और उनके फल तथा ब्रह्मकी प्रातिके उपायोंका वर्णन १५५७
- २१०-विषयसेवनसे हानि; तत्सङ्गसे लाभ और ब्राह्मी विद्याका वर्णन ... १५६१
- २११-अज्ञमहाभूतोंके गुणोंका और इन्द्रियनिग्रहका वर्णन ... १५६३
- २१२-तीनों गुणोंके स्वरूप और फलका वर्णन ... १५६५
- २१३-प्राणायामकी स्थितिका वर्णन तथा परमात्मसाक्षात्कारके उपाय ... १५६६
- २१४-माता-पिताकी सेवाका दिग्दर्शन ... १५७०
- २१५-धर्मव्याधका कौशिक ब्राह्मणको माता-पिताकी सेवाका उपदेश देकर अपने पूर्वजन्मकी कथा कहते हुए व्याध होनेका कारण बताना ... १५७२
- २१६-कौशिक-धर्मव्याध-संवादका उपसंहार तथा कौशिकका अपने परकी प्रस्थान ... १५७४
- २१७-अग्निका अक्षिराको अपना प्रथम पुत्र स्वीकार करना तथा अक्षिरासे बृहस्पतिकी उत्पत्ति ... १५७७
- २१८-अक्षिराकी संततिका वर्णन ... १५७९
- २१९-बृहस्पतिकी संततिका वर्णन ... १५७९
- २२०-पाञ्चजन्य अग्निकी उत्पत्ति तथा उसकी संततिका वर्णन ... १५८१
- २२१-अग्निस्वरूप तप और भानु (मनुकी) संततिका वर्णन ... १५८३
- २२२-सह नामक अग्निका जलमें प्रवेश और अथर्वा अक्षिराद्वारा पुनः उनका प्राकट्य ... १५८६
- २२३-इन्द्रके द्वारा केशीके हाथसे देवसेनाका उद्धार १५८८
- २२४-इन्द्रका देवसेनाके साथ ब्रह्माजीके पास तथा ब्रह्मर्षियोंके आश्रमपर जाना; अग्निका मोह और वनगमन ... १५८९
- २२५-स्वाहाका मुनिपणियोंके कर्णोंमें अग्निसे साथ समागम; स्कन्दकी उत्पत्ति तथा उनके द्वारा क्रौञ्च आदि पक्षियोंका विदारण ... १५९३
- २२६-विश्वामित्रका स्कन्दके जातकर्मदि खेद संस्कार करना और विश्वामित्रके समझानेपर भी ऋषियोंका अपनी पत्नियोंकी स्वीकार न करना तथा अग्निदेव आदिके द्वारा बालक स्कन्दकी रक्षा करना ... १५९५
- २२७-पराजित होकर घरणमें आये हुए इन्द्रसहित देवताओंको स्कन्दका अभयदान ... १५९८
- २२८-स्कन्दके पार्षदोंका वर्णन ... १५९९

- २२९-स्कन्दका इन्द्रके साथ वार्तालाप, देवसेनापति-
के पदपर अभिषेक तथा देवसेनाके भाग
उनका विवाह ... १६००
- २३०-कृतिकाओंको नक्षत्रमण्डलमें स्थानकी प्राप्ति
तथा मनुष्योंको कष्ट देनेवाले विविध अष्टौक्य
वर्णन ... १६०४
- २३१-स्कन्दद्वारा स्वाहादेवीका स्तुत्य, रुद्रदेवके
साथ स्कन्द और देवताओंकी भद्रवट-यात्रा,
देवासुर-संग्राम, मर्दिवासुर-युध तथा स्कन्दकी
प्रशंसा ... १६०९
- २३२-कार्तिकेयके प्रसिद्ध नामोंका वर्णन तथा
उनका स्तवन ... १६१६

(द्रौपदीसत्यभामासंवादपर्व)

- २३३-द्रौपदीका सत्यभामाको सती स्त्रियोंके कर्तव्यकी
शिक्षा देना ... १६१८
- २३४-पतिदेवको अनुकूल करनेका उपाय-पतिकी
अनन्यभावसे सेवा ... १६२१
- २३५-सत्यभामाका द्रौपदीको आश्वासन देकर
श्रीकृष्णके साथ द्वारिकाको प्रस्थान ... १६२४

(घोषयात्रापर्व)

- २३६-पाण्डवोंका समाचार सुनकर धृतराष्ट्रका खेद
और चिन्तापूर्ण उद्गार ... १६२६
- २३७-शकुनि और कर्णका दुर्योधनकी प्रशंसा करते
हुए उसे वनमें पाण्डवोंके पास बल्लभनेके
लिये उभाड़ना ... १६२९
- २३८-दुर्योधनके द्वारा कर्ण और शकुनिकी मन्त्रणा
स्वीकार करना तथा कर्ण आदिक्र घोरयात्रा-
को निमित्त बनाकर द्वैतवनमें जानेके लिये
धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेने जाना ... १६३१
- २३९-कर्ण आदिके द्वारा द्वैतवनमें जानेका प्रस्ताव,
राजा धृतराष्ट्रकी अस्वीकृति, शकुनिकी
समझाना, धृतराष्ट्रका अनुमति देना तथा
दुर्योधनका प्रस्थान ... १६३३
- २४०-दुर्योधनका सेनासहित वनमें जाकर गौओंकी
देखभाल करना और उसके सैनिकों एवं
गन्धर्वोंमें परस्पर कटु संवाद ... १६३५
- २४१-कौरवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध और कर्णकी
पराजय ... १६३८
- २४२-गन्धर्वोंद्वारा दुर्योधन आदिकी पराजय और
उनका अपहरण ... १६४०

- २४३-युधिष्ठिरका भीमसेनको गन्धर्वोंके हाथसे
कौरवोंको छुड़ानेका आदेश और इसके लिये
अर्जुनकी प्रतिज्ञा ... १६४२
- २४४-पाण्डवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध ... १६४४
- २४५-पाण्डवोंके द्वारा गन्धर्वोंकी पराजय ... १६४६
- २४६-चित्रसेन, अर्जुन तथा युधिष्ठिरका संवाद और
दुर्योधनका सुटकाया ... १६४८
- २४७-सेनासहित दुर्योधनका मार्गमें ठहरना और
कर्णके द्वारा उसका अभिनन्दन ... १६५०
- २४८-दुर्योधनका कर्णकी अपनी पराजयका समाचार
बताना ... १६५१
- २४९-दुर्योधनका कर्णसे अपनी स्थानिका वर्णन करते
हुए आमरण अनशनका निश्चय, दुःशासनको
राजाधननेका आदेश, दुःशासनका दुःख और
कर्णका दुर्योधनको समझाना ... १६५३
- २५०-कर्णके समझानेपर भी दुर्योधनका आमरण
अनशन करनेका ही निश्चय ... १६५६
- २५१-शकुनिके समझानेपर भी दुर्योधनको प्रायोप-
वेशनसे विचलित होते न देखकर दैत्योंका
कृत्याद्वारा उसे रसातलमें डुलाना ... १६५७
- २५२-दमनवोंका दुर्योधनको समझाना और कर्णके
अनुरोध करनेपर दुर्योधनका अनशन त्याग
करके हस्तिनापुरको प्रस्थान ... १६५९
- २५३-भीष्मका कर्णकी निन्दा करते हुए दुर्योधन-
को पाण्डवोंसे संधि करनेका परामर्श देना,
कर्णके क्षोभपूर्ण वचन और दिग्विजयके लिये
प्रस्थान ... १६६३
- २५४-कर्णके द्वारा सारी पृथ्वीपर दिग्विजय और
हस्तिनापुरमें उसका उत्कार ... १६६५
- २५५-कर्ण और पुरोहितकी सलाहसे दुर्योधनकी
वेपथ्वयज्ञके लिये तैयारी ... १६६७
- २५६-दुर्योधनके यज्ञका आरम्भ एवं समाप्ति ... १६६९
- २५७-दुर्योधनके यज्ञके विषयमें लोगोंका मत, कर्ण-
द्वारा अर्जुनके वधकी प्रतिज्ञा, युधिष्ठिरकी
चिन्ता तथा दुर्योधनकी शासननीति ... १६७१

(सृगस्वप्नोद्भवपर्व)

- २५८-पाण्डवोंका काम्यकवनमें गमन ... १६७३

(भीहिद्रौणिकपर्व)

- २५९-युधिष्ठिरकी चिन्ता, व्यासजीका पाण्डवोंके
पास आगमन और दानकी महत्ताका
प्रतिपादन ... १६७४

- २६०-दुर्वासाद्वारा महर्षि मुद्गलके दानधर्म एवं धैर्यकी परीक्षा तथा मुद्गलका देवदूतसे कुछ प्रश्न करना १६७७
 २६१-देवदूतद्वारा स्वर्गलोकके गुण-दोषोंका तथा दोषरहित विष्णुधामका वर्णन सुनकर मुद्गलका देवदूतको लौटा देना एवं व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाकर अपने आश्रमको लौट जाना १६८०

(द्रौपदीहरणपर्व)

- २६२-दुर्योधनका महर्षि दुर्वासाको आतिथ्यसत्कारसे संतुष्ट करके उन्हें युधिष्ठिरके पास भेजकर प्रसन्न होना ... १६८४
 २६३-दुर्वासाका पाण्डवोंके आश्रमपर असमयमें आतिथ्यके लिये जाना; द्रौपदीके द्वारा स्मरण किये जानेपर भगवान्का प्रकट होना तथा पाण्डवोंको दुर्वासाके भयसे मुक्त करना और उनको आश्वत्थन देकर द्वारका जाना ... १६८६
 २६४-जयद्रथका द्रौपदीको देखकर मोहित होना और उसके पास कोटिकास्यको भेजना १६८९
 २६५-कोटिकास्यका द्रौपदीसे जयद्रथ और उसके साथियोंका परिचय देते हुए उसका भी परिचय पूछना ... १६९१
 २६६-द्रौपदीका कोटिकास्यको उत्तर ... १६९२
 २६७-जयद्रथ और द्रौपदीका संवाद ... १६९३
 २६८-द्रौपदीका जयद्रथको फटकारना और जयद्रथ-द्वारा उसका अपहरण ... १६९५
 २६९-पाण्डवोंका आश्रमपर लौटना और भात्रेयिक-से द्रौपदीहरणका वृत्तान्त जानकर जयद्रथका पीछा करना ... १६९८
 २७०-द्रौपदीद्वारा जयद्रथके सामने पाण्डवोंके पराक्रमका वर्णन ... १७०१
 २७१-पाण्डवोंद्वारा जयद्रथकी सेनाका संहार; जयद्रथका पतन; द्रौपदी तथा नकुल-सहदेवके साथ युधिष्ठिरका आश्रमपर लौटना तथा भीम और अर्जुनका वनमें जयद्रथका पीछा करना ... १७०४

(जयद्रथविमोक्षणपर्व)

- २७२-भीमद्वारा बंदी होकर जयद्रथका युधिष्ठिरके सामने उपस्थित होना; उनकी भावासे झूट-कर उसका गङ्गाद्वारमें तप करके भगवान् विष्णुसे वरदान पाना तथा भगवान् शिवद्वारा अर्जुनके सहायक भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन ... १७०८

(रामोपाख्यानपर्व)

- २७३-अपनी दुरवस्थासे दुखी हुए युधिष्ठिरका मार्कण्डेय मुनिसे प्रश्न करना ... १७१४
 २७४-श्रीराम आदिका कथन तथा कुबेरकी उत्पत्ति और उन्हें ऐश्वर्यकी प्राप्ति ... १७१५
 २७५-रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, सर और शूर्पणखाकी उत्पत्ति; तपस्या और वर-प्राप्ति तथा कुबेरका रावणको श्राप देना ... १७१६
 २७६-देवताओंका ब्रह्माजीके पास जाकर रावणके अत्याचारसे बचानेके लिये प्रार्थना करना तथा ब्रह्माजीकी आज्ञासे देवताओंका रीठ और वानरयोनिमें संतान उत्पन्न करना एवं दुन्दुभी गन्धर्वोंका मन्थरा वनकर आना ... १७१९
 २७७-श्रीरामके राज्याभिषेककी तैयारी; रामवन-गमन; भरतकी चित्रकूटयात्रा; रामके द्वारा सर-दूषण आदि राक्षसोंका नाश तथा रावण-का मारीचके पास जाना ... १७२१
 २७८-मृगरूपधारी मारीचका वध तथा सीताका अपहरण ... १७२५
 २७९-रावणद्वारा जटायुका वध; श्रीरामद्वारा उसका अन्त्येष्टि-संस्कार; कबन्धका वध तथा उसके दिव्यस्वरूपसे वार्तालाप ... १७२९
 २८०-राम और सुग्रीवकी मित्रता; बाली और सुग्रीवका युद्ध; श्रीरामके द्वारा बालीका वध तथा लङ्काकी अशोकवाटिकामें राक्षसियोंद्वारा डरायी हुई सीताको त्रिजटाका आश्वत्थन ... १७३३
 २८१-रावण और सीताका संवाद ... १७३८
 २८२-श्रीरामका सुग्रीवपर कोप; सुग्रीवका सीताकी लोभमें वानरोंको भेजना तथा ब्रौह्मन्मानी-का लौटकर अपनी लङ्कायात्राका वृत्तान्त निवेदन करना ... १७४०
 २८३-वानर-सेनाका संगठन; सेतुका निर्माण; विभीषणका अभिषेक और लङ्काकी सीमामें सेनाका प्रवेश तथा अंगदको रावणके पास दूत बनाकर भेजना ... १७४५
 २८४-अंगदका रावणके पास जाकर रामका संदेश सुनाकर लौटना तथा राक्षसों और वानरोंका घोर संग्राम ... १७४९

- २८५-भीरम और रावणकी सेनाओंका इन्द्र युद्ध १७५२
 २८६-महत्त और धूम्राशुके वधसे दुखी हुए
 रावणका कुम्भकर्णको जगाना और उसे
 युद्धमें भेजना ... १७५४
 २८७-कुम्भकर्ण, वज्रवेग और प्रमाथीका वध ... १७५६
 २८८-इन्द्रजित्का मायामय युद्ध तथा भीरम और
 लक्ष्मणकी मूर्छा ... १७५८
 २८९-भीरम-लक्ष्मणका सचेत होकर कुबेरके भेजे
 हुए अभिमन्त्रित शल्ये प्रमुख बानरोंसहित
 आने नेत्र धोना, लक्ष्मणद्वारा इन्द्रजित्का
 वध एवं सीताको मारनेके लिये उद्यत हुए
 रावणका अविन्ध्यके द्वारा निवारण करना १७६०
 २९०-राम और रावणका युद्ध तथा रावणका वध १७६२
 २९१-भीरमका सीताके प्रति सदेह, देवताओंद्वारा
 सीताकी शुद्धिका समर्पन, भीरमका शल-
 यलसहित लङ्कासे प्रस्थान एवं किष्किन्धा होते
 हुए अयोध्यामें पहुँचकर भरतसे मिलना तथा
 राज्यपर अभिषिक्त होना ... १७६५
 २९२-मार्कण्डेयजीके द्वारा राजा युधिष्ठिरको आवाहन १७७०

(पतिव्रतामाहात्म्यपर्व)

- २९३-राजा अभयपतिको देवी सावित्रीके वरदानसे
 सावित्री नामक कन्याकी प्राप्ति तथा सावित्रीका
 पतिवरणके लिये विभिन्न देशोंमें भ्रमण १७७१
 २९४-सावित्रीका सत्यवान्के साथ विवाह करनेका
 इद निश्चय ... १७७४
 २९५-सत्यवान् और सावित्रीका विवाह तथा
 सावित्रीका अपनी सेवाओंद्वारा स्वको
 संतुष्ट करना ... १७७७
 २९६-सावित्रीकी व्रतधर्या तथा सप्त-समुद्र और
 पतिकी आज्ञा लेकर सत्यवान्के साथ उसका
 वनमें जाना ... १७७९
 २९७-सावित्री और यमका संवाद, यमराजका
 संतुष्ट होकर सावित्रीको अनेक वरदान देते हुए
 मरे हुए सत्यवान्को भी जीवित कर देना
 तथा सत्यवान् और सावित्रीका व्रतस्वरूप एवं
 आश्रमकी और प्रस्थान ... १७८२

- २९८-पत्नीसहित राजा शुभम्भेनकी सत्यवान्के लिये
 चिन्ता, श्रुतिपौरोंका उन्हें आश्वासन देना, सावित्री
 और सत्यवान्का आगमन तथा सावित्रीद्वारा
 विलम्बसे आनेके कारणपर प्रकाश डालते
 हुए वर प्राप्तिका विवरण क्ताना ... १७९३
 २९९-शास्वदेशकी प्रजाके अनुरोधसे महाराज
 शुभम्भेनका राज्यभित्ति करना तथा सावित्री
 को सौ पुत्रों और सौ भार्ययोंकी प्राप्ति ... १७९६

(कुण्डलाक्षरणपर्व)

- ३००-सूर्यका स्वप्नमें कर्णको दर्शन देकर उसे
 इन्द्रको कुण्डल और कवच न देनेके लिये
 सचेत करना तथा कर्णका आग्रहपूर्वक
 कुण्डल और कवच देनेका ही निश्चय रखना १७९८
 ३०१-सूर्यका कर्णको समझाते हुए उसे इन्द्रको
 कुण्डल न देनेका आदेश देना ... १८००
 ३०२-सूर्य-कर्ण-संवाद, सूर्यकी आज्ञाके अनुसार
 कर्णका इन्द्रसे शक्ति लेकर ही उन्हें कुण्डल
 और कवच देनेका निश्चय ... १८०२
 ३०३-कुन्तिभोजके यहाँ महर्षि दुर्वासका आगमन
 तथा राजाका उनकी सेवाके लिये पृथाको
 आवश्यक उपदेश देना ... १८०४
 ३०४-कुन्तीका पितासे वार्तालाप और ब्राह्मणकी
 परिचर्चा ... १८०६
 ३०५-कुन्तीकी सेवासे संतुष्ट होकर तपस्वी ब्राह्मणका
 उसको सन्तका उपदेश देना ... १८०७
 ३०६-कुन्तीके द्वारा सूर्यदेवताका आवाहन तथा
 कुन्ती-सूर्य-संवाद ... १८०९
 ३०७-सूर्यद्वारा कुन्तीके उदरमें गर्भस्थापन ... १८११
 ३०८-कर्णका जन्म, कुन्तीका उसे पिठारीमें रखकर
 जलमें बहा देना और पिछाप करना ... १८१३
 ३०९-अधिरथ शूद्र तथा उसकी पत्नी राधाको
 बालक कर्णकी प्राप्ति, राधाके द्वारा उसका
 पालन, हस्तिनापुरमें उसकी शिक्षा-दीक्षा
 तथा कर्णके पास इन्द्रका आगमन ... १८१५
 ३१०-इन्द्रका कर्णको अमोघ-शक्ति देकर कहलेमें
 उसके कवच-कुण्डल लेना ... १८१७

(आरण्यपर्व)

- ३११-ब्राह्मणकी अरुणि एवं मन्थन-काहका पता
 लगानेके लिये पाण्डवोंका मृगके पीछे दौड़ना
 और दुखी होना ... १८२०

- ११२-पानी लानेके लिये गये हुए नकुल आदि
चार भाइयोंका सरोवरके तटपर अवेत
होकर गिरना ... १८२२
- ११३-वध और युधिष्ठिरका प्रश्नोत्तर तथा युधिष्ठिर-
के उत्तरसे संतुष्ट हुए यक्षका चारों भाइयोंके
जीवित होनेका वरदान देना ... १८२५

- ११४-यक्षका चारों भाइयोंको जिलाकर धर्मके
रूपमें प्रकट हो युधिष्ठिरको वरदान देना ... १८१५
- ११५-अज्ञातवासके लिये अनुमति लेते समय
शोकाकुल हुए युधिष्ठिरकी महर्षि भीष्मका
समझाना, भीमसेनका उत्साह देना तथा
आश्रमसे दूर जाकर पाण्डवोंका परस्पर
परामर्शके लिये बैठना ... १८३७

चित्र-सूची

(तिरंगा)

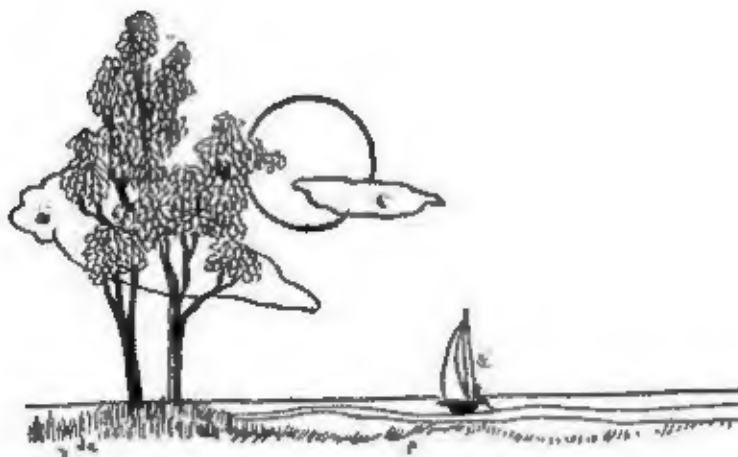
- १-पाण्डवोंका वनगमन ... १४५
- २-उर्वशीका अर्जुनको शाप देना ... १०८१
- ३-नलका अपने पूर्वरूपमें प्रकट
होकर दमयन्तीसे मिलना ... ११६२
- ४-भगवान् शिवका आकाशसे गिरती हुई
गङ्गाको अपने सिरपर धारण करना ... ११९३
- ५-जमदग्निका परशुरामसे कार्तवीर्य-
अर्जुनका अपराध बताना ... १२८०
- ६-महाप्रलयके समय भगवान् मत्स्यके
सींगमें बँधी हुई मनु और सप्तर्षियों-
सहित नौका ... १३९३
- ७-मार्कण्डेय मुनिको अश्वत्थामकी शाखा-
पर वाल्म्यकुन्दका दर्शन ... १४८७
- ८-इन्द्रके द्वारा देवसेनाका
स्कन्दको समर्पण ... १५९३
- ९-सागके एक पत्तेसे विश्वकी वृत्ति ... १६८७

(साव्र)

- १०-भगवान् सूर्यका युधिष्ठिरको
अश्वपान देना ... १६०
- ११-श्रिकृष्णके द्वारा द्रौपदीको आश्वासन ... १९७
- १२-द्रौपदी और भीमसेनका युधिष्ठिरसे संवाद ... १०२८
- १३-अर्जुनकी तपस्या ... १०६१
- १४-अर्जुनका किरातवेधधारी
भगवान् शिवपर बाण चलाना ... १०६१

- १५-नलकी पहचानके लिये दमयन्तीकी
लोकपालसे प्रार्थना ... ११०५
- १६-सती दमयन्तीके तेजसे
पापी व्याधका बिनाश ... ११२०
- १७-भगवान् शङ्करका मङ्गणक
मुनिको नृत्य करनेसे रोकना ... ११८८
- १८-देवताओंद्वारा वृत्रासुरके वधके लिये
दधीचिसे उनकी अस्त्रियोंकी याचना ... १२४१
- १९-देवराज इन्द्रका वज्रके प्रहारसे
वृत्रासुरका वध करना ... १२४१
- २०-महर्षि कपिलकी क्रोधाग्निमें सगर-
पुत्रोंका भस्म होना ... १२५५
- २१-महर्षि अगस्त्यका समुद्र-पान ... १२५५
- २२-भगवान् परशुरामद्वारा सहस्रार्जुनका वध ... १२८५
- २३-प्रभासक्षेत्रमें पाण्डवोंकी यादवोंसे भेंट ... १२८५
- २४-सुकन्याकी अश्विनीकुमारोंसे अपने
पतिको बतलानेकी प्रार्थना ... १२९६
- २५-राजा शिविका कबूतरकी रक्षाके लिये राजकी
अपने शरीरका मांस काटकर देना ... १३१३
- २६-द्रौपदीका भीमसेनकी सौगन्धिक पुष्प
भेंट करके बैसे ही और पुष्प लानेका आग्रह ... १३५३
- २७-स्वर्गसे लौटकर अर्जुन धर्मराजकी
प्रणाम कर रहे हैं ... १४१२

२८-वनमें पाण्डवोंसे श्रीकृष्ण-सत्यभामाका मिलना	१४११	३५-द्रौपदी-सत्यभामा-संवाद	***	१६१९	
२९-तार्क्यको सरस्वतीका उपदेश	***	१४७५	३६-अर्जुन-विप्रसेन-युद्ध	***	१६४७
३०-सरस्वीके वेशमें मण्डूकराजका राजाको अश्वारोह	***	१५०४	३७-पाण्डवोंके पाप दुर्योधनका दूत	***	१६८३
३१-ययातिसे ब्राह्मणकी याचना	***	१५०४	३८-सुहृदका स्वर्ग जानेसे ह्मकार	***	१६८३
३२-भगवान् विष्णुके द्वारा मधुकैटभका जोंघोंपर वध	***	१५१९	३९-सीताजीका रावणको फटकारना	***	१७४०
३३-माता-पिताके भक्त धर्मन्याय और कौशिक नामाग्न	***	१५७०	४०-हनुमान्जीकी श्रीसीताजीसे भेंट	***	१७४०
३४-कातिकेयके द्वारा महिषासुरका वध	***	१६१५	४१-यम-सावित्री	***	१७८३
			४२-इन्द्रका शक्ति-दान	***	१७९३
			४३-युधिष्ठिर और दगुलारूपधारी वध	***	१७९३
			४४-(१८४ लाइन चित्र फरमोंमें)		



विराटपर्व

कथन

विषय

पृष्ठ-संख्या

कथन

विषय

पृष्ठ-संख्या

(पाण्डवप्रवेशपर्व)

- १-विराटनगरमें अज्ञातवास करनेके लिये पाण्डवों-
की गुप्त मन्त्रणा तथा युधिष्ठिरके द्वारा अपने
भावी कार्यक्रमका दिग्दर्शन ... १८४१
- २-भीमसेन और अर्जुनद्वारा विराटनगरमें किये
जानेवाले अपने अनुकूल कार्योंका निर्देश १८४३
- ३-नकुल, सहदेव तथा द्रौपदीद्वारा अपने-अपने
भावी कर्तव्योंका दिग्दर्शन ... १८४६
- ४-भीमका पाण्डवोंको राजाके यहाँ रहनेका ढंग
बताना और धनका अपने-अपने अभीष्ट
स्थानोंको जाना ... १८४८
- ५-पाण्डवोंका विराटनगरके समीप पहुँचकर
रम्यानमें एक शमीवृक्षपर अपने अस्त्र-शस्त्र रखना १८५३
- ६-युधिष्ठिरद्वारा दुर्गादेवीकी स्तुति और देवीका
प्रत्यक्ष प्रकट होकर उन्हें घर देना ... १८५५
- ७-युधिष्ठिरका राजसभामें जाकर विराटसे मिलना
और वहाँ आदरपूर्वक निवास पाना ... १८५८
- ८-भीमसेनका राजा विराटकी सभामें प्रवेश और
राजाके द्वारा आश्वासन पाना ... १८६१
- ९-द्रौपदीका सैरन्त्रीके वेशमें विराटके रनिवासमें
जाकर रानी सुदेष्णासे वार्तालाप करना और
वहाँ निवास पाना ... १८६३
- १०-सहदेवका राजा विराटके साथ वार्तालाप और
गौओंकी देख-भालके लिये उनकी नियुक्ति १८६६
- ११-अर्जुनका राजा विराटसे मिलना और राजाके
द्वारा कन्याओंको नृत्य आदिकी शिक्षा देनेके
लिये उनको नियुक्त करना ... १८६८
- १२-नकुलका विराटके अधीकी देख-रेखमें नियुक्त
होना ... १८७०

(समयपालनपर्व)

- १३-भीमसेनके द्वारा जीमूत नामक विश्वविख्यात
मत्तका वध ... १८७२

(कीचकवधपर्व)

- १४-कीचकका द्रौपदीपर आसक्त हो उससे प्रणय-
वाक्या करना और द्रौपदीका उसे फटकारना १८७६
- १५-रानी सुदेष्णाका द्रौपदीको कीचकके घर
भेजना ... १८८१
- १६-कीचकद्वारा द्रौपदीका अपमान ... १८८५
- १७-द्रौपदीका भीमसेनके समीप जाना ... १८९५
- १८-द्रौपदीका भीमसेनके प्रति अपने दुःखके उद्गार
प्रकट करना ... १८९६
- १९-पाण्डवोंके दुःखसे दुःखित द्रौपदीका भीमसेनके
सम्मुख विवक्षित ... १८९९

- २०-द्रौपदीद्वारा भीमसेनसे अपना दुःख निवेदन
करना ... १९०३
- २१-भीमसेन और द्रौपदीका संवाद ... १९०५
- २२-कीचक और भीमसेनका युद्ध तथा कीचकवध १९०९
- २३-उपकीचकोंका सैरन्त्रीको बाँधकर रम्यानभूमिमें
छे जाना और भीमसेनका उन सबको मारकर
सैरन्त्रीको छुड़ाना ... १९१५
- २४-द्रौपदीका राजमहलमें छोटकर आना और
नृहजल एवं सुदेष्णासे उसकी बातचीत १९१८

(गोहरणपर्व)

- २५-दुर्योधनके पक्ष उससे गुप्तचरोंका आना और
उनका पाण्डवोंके विषयमें कुछ पता न लगने-
यह बताकर कीचकवधका वृत्तान्त सुनाना १९२१
- २६-दुर्योधनका सभासदोंसे पाण्डवोंका पता लगाने-
के लिये परामर्श तथा इस विषयमें कर्ण और
दुःशासनकी सम्मति ... १९२३
- २७-आचार्य द्रोणकी सम्मति ... १९२४
- २८-युधिष्ठिरकी महिमा कहते हुए भीष्मकी पाण्डवों-
के अन्वेषणके विषयमें सम्मति ... १९२५
- २९-कृपाचार्यकी सम्मति और दुर्योधनका निश्चय १९२८
- ३०-सुशर्माके प्रस्तावके अनुसार त्रिगर्तों और
कौरवोंका मत्स्यदेशपर धावा ... १९३०
- ३१-चारों पाण्डवोंसहित राजा विराटकी सेनाका
युद्धके लिये प्रस्थान ... १९३२
- ३२-मत्स्य तथा त्रिगर्तदेशीय सेनाओंका परस्पर युद्ध १९३५
- ३३-सुशर्माका निराटको पकड़कर छे जाना, पाण्डवों-
के प्रयत्नसे उनका छुटकारा, भीमद्वारा सुशर्मा-
का निग्रह और युधिष्ठिरका अनुग्रह करके उसे
छोड़ देना ... १९३८
- ३४-राजा विराटद्वारा पाण्डवोंका सम्मान, युधिष्ठिर-
द्वारा राजाका अभिनन्दन तथा विराटनगरमें
राजाकी विजय-घोषणा ... १९४२
- ३५-कौरवोंद्वारा उत्तर दिशाकी ओरसे आकर
विराटकी गौओंका अपहरण और गोपायकका
उत्तरकुमारकी युद्धके लिये उत्साह दिलाना १९४४
- ३६-उत्तरका अपने लिये सारथि ढूँढ़नेका प्रस्ताव,
अर्जुनकी सम्मतिसे द्रौपदीका नृहजलको सारथि
बनानेके लिये सुझाव देना ... १९४६
- ३७-नृहजलको सारथि बनाकर राजकुमार उत्तरका
रणभूमिमें और प्रस्थान ... १९४८
- ३८-उत्तरकुमारका भय और अर्जुनका उसे आश्वासन
देकर रथपर चढ़ाना ... १९५१
- ३९-द्रोणाचार्यद्वारा अर्जुनके अलौकिक पराक्रमकी
प्रशंसा ... १९५५

- ४०-अर्जुनका उत्तरको शर्मोन्मत्त अस्त्र उतारनेके लिये आदेश ... १९५७
- ४१-उत्तरका अर्जुनके आदेशके अनुसार शर्मोन्मत्तसे पाण्डवोंके दिव्य धनुष आदि उतारना ... १९५८
- ४२-उत्तरका बृहन्नलासे पाण्डवोंके अस्त्र-शस्त्रोंके विषयमें प्रश्न करना ... १९५९
- ४३-बृहन्नलद्वारा उत्तरको पाण्डवोंके आपुधोंका परिचय कराना ... १९६०
- ४४-अर्जुनका उत्तरकुमारसे अपना और अपने भाइयोंका यथार्थ परिचय देना ... १९६२
- ४५-अर्जुनद्वारा युद्धकी तैयारी, अस्त्र-शस्त्रोंका स्मरण, उनसे वार्तालाप तथा उत्तरके भयका निवारण ... १९६४
- ४६-उत्तरके रथपर अर्जुनको ध्वजकी प्राप्ति, अर्जुनका शङ्खनाद और द्रोणाचार्यका कौरवोंसे उत्पातपूचक अपराधुनोंका वर्णन ... १९६७
- ४७-दुर्योधनके द्वारा युद्धका निश्चय तथा कर्णकी उत्ति ... १९७०
- ४८-कर्णकी आत्मप्रशंसापूर्व अहंकारोक्ति ... १९७२
- ४९-कृपाचार्यका कर्णको फटकारते हुए युद्धके विषयमें अपना विचार बताना ... १९७४
- ५०-अश्वत्थामाके उद्गार ... १९७६
- ५१-भीष्मजीके द्वारा सेनामें शान्ति और एकता बनाये रखनेकी चेष्टा तथा द्रोणाचार्यके द्वारा दुर्योधनकी रक्षाके लिये प्रयत्न ... १९७८
- ५२-वित्तामह भीष्मकी सम्मति ... १९८०
- ५३-अर्जुनका दुर्योधनकी सेनापर आक्रमण करके गौओंको लूटना ... १९८२
- ५४-अर्जुनका कर्णपर आक्रमण, विकर्णकी पराजय, शत्रुताप और समामजित्वा बध, कर्ण और अर्जुनका युद्ध तथा कर्णका पल्लवन ... १९८४
- ५५-अर्जुनद्वारा कौरवसेनाका संहार और उत्तरका उनके रथको कृपाचार्यके पास ले जाना ... १९८८
- ५६-अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये देवताओंका आकाशमें विमानोंपर आगमन ... १९९३
- ५७-कृपाचार्य और अर्जुनका युद्ध तथा कौरवपक्षके सैनिकोंद्वारा कृपाचार्यको हटा ले जाना ... १९९४
- ५८-अर्जुनका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और आचार्यका पल्लवन ... १९९७
- ५९-अश्वत्थामाके साथ अर्जुनका युद्ध ... २००२
- ६०-अर्जुन और कर्णका संवाद तथा कर्णका अर्जुनसे हारकर भागना ... २००४
- ६१-अर्जुनका उत्तरकुमारको आवासन तथा अर्जुनसे दुःशासन आदिको पराजय ... २००६
- ६२-अर्जुनका सब योद्धाओं और महारथियोंके साथ युद्ध ... २००९
- ६३-अर्जुनपर समस्त कौरवपक्षीय महारथियोंका आक्रमण और सबका युद्धभूमिसे पीठ दिलाकर भागना ... २०११
- ६४-अर्जुन और भीष्मका अद्भुत युद्ध तथा मूर्छित भीष्मका सारथिद्वारा रणभूमिसे हटाया जाना ... २०१२
- ६५-अर्जुन और दुर्योधनका युद्ध, विकर्ण आदि योद्धाओंसहित दुर्योधनका युद्धके मैदानसे भागना ... २०१५
- ६६-अर्जुनके द्वारा समस्त कौरवदलकी पराजय तथा कौरवोंका स्वदेशको प्रस्थान ... २०१७
- ६७-विजयी अर्जुन और उत्तरका राजधानीकी ओर प्रस्थान ... २०२१
- ६८-राजा विराटकी उत्तरके विषयमें चिन्ता, विजयी उत्तरका नगरमें प्रवेश, धृजार्जुनद्वारा उनका स्वागत, विराटद्वारा युधिष्ठिरका तिरस्कार और समाचार्यना एवं उत्तरसे युद्धका समाचार पृच्छना ... २०२३
- ६९-राजा विराट और उत्तरकी विजयके विषयमें बातचीत ... २०२९
- (वैवाहिकपर्व)
- ७०-अर्जुनका राजा विराटकी महाराज युधिष्ठिरका परिचय देना ... २०३०
- ७१-विराटकी अन्य पण्डवोंका भी परिचय प्राप्त होना तथा विराटके द्वारा युधिष्ठिरको राज्य समर्पण करके अर्जुनके साथ उत्तरके विवाहका प्रस्ताव करना ... २०३२
- ७२-अर्जुनका अपनी पुत्रवधूके रूपमें उत्तरकी प्रशंसा करना एवं अभिमन्यु और उत्तरका विवाह ... २०३५

चित्र-सूची

- (तिरंगा)
- १-भीमसेन और द्रौपदी ... १९०७
- २-कीचक-बध ... १९०७
- ३-कौरवोंद्वारा विराटकी गधोंका हरण ... १९४४
- (सादा)
- ४-युधिष्ठिरद्वारा देवीकी स्तुति ... १८५६
- ५-विराटके यहाँ पाण्डव ... १८९२
- ६-विराटकी राजसभामें कीचकद्वारा सैन्यीका अपमान ... १८८६
- ७-पाण्डवोंके अन्वेष्टणके विषयमें भीष्मकी सम्मति ... १९२६
- ८-सुशर्मापर भीमसेनका प्रहार ... १९२६
- ९-अर्जुनका शङ्खनाद ... १९६४
- १०-(३० खड्ग चित्र परमोंमें)